आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-112 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जून 2023 | मूल्य - 5 रूपए

गुजरात में हुए बाल संगठनों के पांचवें राष्ट्रीय अधिवेशन में लिया बालकनामा पत्रकारों ने भाग

सिखाये बाल संगठनों को मजबूत करने के गुर

रिपोर्टर असलम, नाज परवीन, किशन, आदि

बालकनामा पत्रकार टीम ने 4 दिन बाल संगठन के पांचवें राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लिया यह अधिवेशन गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद में आयोजित किया गया। बाल संगठन के पांचवें राष्ट्रीय अधिवेशन के लिए आठ अलग-अलग राज्यों से कई संस्थाओं के बाल साथियों ने भाग लिया। इस अधिवेशन का उद्देश्य बच्चों की सहभागिता को बढ़ाना और बाल संगठनों को मजबूत करना था। इस अधिवेशन का आयोजन शेशव संस्था द्वारा किया गया जो कि गुजरात भावनगर में काम करती है। बाल संगठन के पांचवें राष्ट्रीय अधिवेशन में बच्चों ने बहुत सारी गतिविधियों में भाग लिया और अपने संस्थाओं की जानकारी बाकी बच्चों को दी, बच्चों के ग्रुप बनाए गए जहां बच्चों ने एक दूसरे को जाना अन्य संस्थाओं के काम के बारे में जाना। वहां सभी संस्थाओं के लिए एक एग्जीबिशन का आयोजन किया गया। सभी संस्थाओं ने एग्जीबिशन के दौरान चार्ट पेपर और पोस्टर लगाया जिसमें उन्होंने अपने काम को प्रदर्शित किया। बालकनामा टीम ने भी अपना एग्जीबिशन लगाया और वहां आने वाले सभी लोगों को बालकनामा, बढ़ते कदम, और चेतना की जानकारी दी। सभी ने चेतना के काम की तारीफ की और सभी एग्जीबिशन में आने वाले लोगों को बालकनामा दिया गया। बालकनामा के सदस्य भी बाकी एनजीओ के एग्जिबिशन पर गए और वहां उनके काम को समझा। बालकनामा एडिटर ने रिपोर्टिंग का काम किया और बालकनामा का परिचय दिया। उत्तराखंड के बाल संगठन माउंटेन चिल्ड्रन फाउंडेशन के बच्चों ने बताया कि उन्होंने घर-घर जाकर सफाई के लिए जागरूकता अभियान चलाया, सभी परिवारों को सफाई के लिए अंक दिए ताकि लोग ज्यादा से ज्यादा अपने घरों में सफाई रख सके। मुंबई के बाल संगठन बाल अधिकार संघर्ष संगठन ने बताया कि वह ड्रॉप आउट बच्चों का स्कूल में दाखिला कराते हैं। तमिलनाडु के बाल संगठन जागृति और स्नेहा ने बताया कि वह अभी तक 20,000 से ज्यादा पेड़ लगा चुके हैं। बालकनामा के रिपोर्टर ने बालकनामा अखबार की जानकारी देते हुए और विस्तार से बताया और वह किस तरीके से काम करता है। डीसीपीसीआर द्वारा हमें चैंपियन अवार्ड मिला 2 लिम्का रिकॉर्ड बालकनामा के नाम दर्ज है। टाइम्स ऑफ इंडिया और बाकी के रिपोर्टर हमारी न्यूज को छापते हैं।

राष्ट्रीय अधिवेशन द्वारा बच्चे ने सीखा कि बच्चे कैसे अपने संगठन को मजबूत कर सकते हैं। हम बच्चों के अंदर ताकत होती है वह इस ग्रुप में मिलकर बहुत सारी चीजें सीखते समूह में सहभागिता करते हैं। वहां बच्चों को कोई नहीं बताता की सहभागिता उनका अधिकार है। बच्चे खुद ब खुद यह सब चीजें सीख जाते हैं। समूह में अगर कोई उद्देश्य होता है तो सब साथ में मिलकर काम करते हैं, ज्यादा काम करते है, और ज्यादा चीजें सीखते हैं, ग्रुप में हम ज्यादा चीजें अचीव कर सकते हैं। सभी बच्चों में बहुत सारी खूबियां होती है, बच्चे हर चीज को समझते हैं, हर तरह के निर्णय ले सकते हैं। बच्चों के अंदर अद्भुत क्षमताये. होती हैं वह अपनी सोसाइटी में एक बदलाव ला सकते है। उनके समुदाय में किस तरीके की समस्या होती है इन समस्याओं को हम संगठन बनाकर हल कर सकते हैं इसलिए सभी को एक संगठन बनाना बहुत जरूरी है। अधिवेशन में बताया गया कि बताया कि 134 साल पहले 1889 मे अमेरिका में बाल संगठन की शुरूआत की गई।

शपथ एनजीओ से सुखदेव भाई और राजेश भाई आए उन्होंने चाइल्ड लेबर फ्री इंडिया कैंपेन के बारे में बताया जिसमें वह 30 अप्रैल से लेकर 12 जून यानी 44 दिन तक एक कैंपेन चलाते हैं। जिसमें वह बच्चों को चाइल्ड लेबर मुक्त रहने के बारे में बताते हैं।

बच्चों से पूछा गया कि इस वर्कशॉप से उन्होंने क्या सीखा और वह वापस अपने समुदाय में बच्चों को क्या बताएंगे। तब सभी बच्चों ने बताया कि "इतने दिनों में उन्होंने यहाँ जो सीखा है वह उसे अपने संस्था में जाकर बताएंगे और अपने संगठन में बाल सदस्यों की संख्या को बढ़ाएंगे और उनकी समस्याओं को सुलझाएंगे। भेदभाव को रोकेंगे बाल मजदूरी को रोकेंगे, बच्चों की भागीदारी को सुनिश्चित करेंगे। बालकनामा एडिटर द्वारा बताया गया कि वह अन्य संगठन की बातें भी बालकनामा अखबार में छापेंगे। इसके बाद बच्चों को सर्टिफिकेट प्रदान किए गए बच्चों ने फोटो खिंचवाई।

बच्चों को अहमदाबाद घुमाने के लिए इसरो म्यूजियम और साबरमती आश्रम लेकर गए।

बाल संगठन के राष्ट्रीय अधिवेशन में आए बच्चों के विचार-

वाचा संस्था से 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि "गुजरात में ट्रेनिंग में आकर हमें अलग-अलग राज्यों के बच्चों से मिलने का मौका मिला और उनकी भाषाएं भी काफी अलग है जो हमें सुनने में काफी नई लगी और हमने भी वह भाषा सीखने का प्रयास किया हमने उन्हें अपनी भाषा सिखाई और हमने उनकी भाषा सीखी।"

माउंटेन संस्था से आये बाल साथियों ने बताया "हम कई अलग-अलग राज्यों से आए हैं और हमने यहां पर आकर साबरमती आश्रम में कई सारी चीजें घूमी और जिस दौरान हमने गुजरात का जामा मस्जिद भी देखा और काफी नई चीजें सीखने के लिए मिली और काफी मजा आया इस दौरान याददाश्त के लिए हमने यहां पर काफी फोटो भी खींची।"

शपथ संस्था से 13 वर्षीय बालिका ने बताया "मैं रोजाना संस्था में पढ़ने के लिए जाती हूं और हम अपने गांव भी जाते हैं पर इतना लंबा सफर हमने कभी भी नहीं किया हम गुजरात आए तो हमने जीवन में पहली बार इतना लंबा सफर किया और रास्ते में कई नदियां कई पहाड़ आदि चीजें देखने के लिए मिली जिस दौरान दिल काफी खुश हो गया।"

शपथ संस्था से 11 वर्षीय बालिका ने बताया कि "यहां पर आकर अच्छा खाना खाने के लिए मिल रहा है और कभी भी हमने ऐसा खाना सपने में भी नहीं देखा था"।

दिशा संस्था (मुंबई) मे रहने वाली 13 वर्ष बालिका ने बताया हमने यहां पर आकर सभी अलग-अलग राज्यों के बाल साथियों के साथ दोस्ती की और हमने बाल साथियों के साथ अपनी राज्यों की बातें शेयर की और उनके राज्य की भी बातें जानी।

स्नेहा संस्था से 14 वर्षीय आयुष ने बताया "यहां पर आकर हमने कल्चर प्रोग्राम किया जिस दौरान हमने अलग-अलग राज्यों के बाल साथियों का नृत्य देखा और ऐसा ऐसा नृत्य देखा जो हमने सिर्फ अभी तक टीवी में ही देखा था। पर हमने यहां पर आकर अपनी आंखों से ऐसा नृत्य देखा जिस दौरान हमने उन सभी भी अलग अलग नृत्य करने वाले बाल साथियों के साथ फोटो भी खिंचवाई और काफी मजा उठाया।"

अंत में वहां एक कल्चर प्रोग्राम का आयोजन किया गया कल्चर प्रोग्राम के दौरान सभी संस्थाओं के बाल साथियों ने अपने राज्य के अनुसार अपनी वेशभूषा पहनकर अपने राज्य के गानों पर डांस किया। बालकनामा के सदस्यों ने भी इस डांस की गतिविधि में भाग लिया और सभी को नाचने पर मजबूर कर दिया सभी ने काफी अच्छे से कल्चरल प्रोग्राम किया।

गर्मी के बढ़ते पारे और बिजली न आने से बढ़ी बच्चों की दिक्कतें

ब्यूरो रिपोर्ट

अप्रैल के महीने से पड़ती गर्मी से सबसे ज्यादा परेशानियां हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों को हो रही हैं। लखनऊ के कामकाजी बच्चों ने बालकनामा पत्रकार को बताया कि अप्रैल महीने से ही बढ़ती गर्मी से हमारी बस्ती में लोगों को बहुत दिक्कतें हो रही हैं। एक तो गर्मी बढ़ रही हैं और दूसरे हमारी बस्ती में ज्यादातर बच्चों के घरों

अनेक प्रयासों के बाद भी कनेक्शन न मिलने से निराश

में बिजली नहीं है, जिसके कारण और भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बिजली न होने से गर्मी के कारण पसीने से शरीर में खुजली होने लगती हैं और बहुत

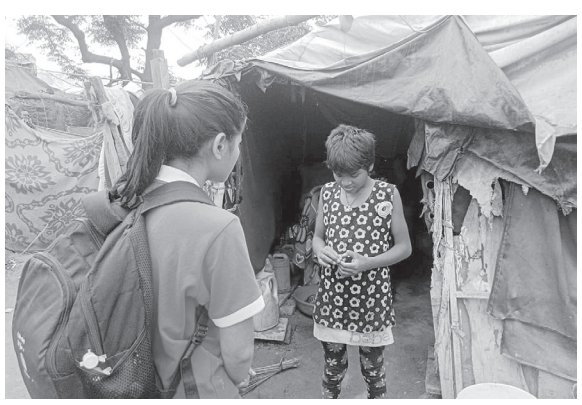

उलझन मचती है। बच्चों ने पत्रकार को यह भी जानकारी दी कि कभी-कभी लगता है यह सारी समस्याएं हमारे साथ ही क्यों होती है? हमें न तो सर्दियों में सुख मिलता हैं और न गर्मियों में और जितने भी सीजन आते हैं उसमें हम लोगों को बाहर काम पर जाने में बहुत दिक्कतें होती हैं। फिर भी हम लोग किसी को कुछ नहीं कहते और न ही किसी से इस विषय को लेकर शिकायत करते हैं। क्योकि हमें पता हैं कि हमारी कोई सुनने वाला नहीं है। बच्चों से बातचीत के दौरान पत्रकार को यह पता चला कि जहां पर ये लोग रहते हैं वहां पर कई बार बिजली लगवाने या फिर बिजली कनेक्शन करवाने की कोशिश की गयी है, लेकिन किसी न किसी कारण से वह काम नहीं हो पाया है। इसीलिए अब बच्चे और बच्चों के घरवाले भी इस बात की उम्मीद छोड़ चुके हैं कि अब उनके घर में भी बिजली आ सकती है।

बच्चों की कहानी बच्चों की जुबानी

बाल मजदूरी की स्थिति में क्या हुआ है बदलाव?

बातूनी रिपोर्टर कामिनी व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

बाल मजदूरी कभी बंद नहीं हो सकती। हम जिस भी राज्य में नजर डालें वहां पर बच्चे बाल मजदूरी करते नजर आ जाएंगे। हर जगह बच्चे सब्जी की दुकान पर, फल, गुटका बीड़ी सिगरेट, खिलौने आदि काम करते हुए नजर आ जाएंगे। पत्रकारों ने बाल मजदूरी के बारे में बच्चों से बात करके यह जानने का प्रयास किया कि कामकाजी बच्चों की संख्या में कुछ बदलाव हुआ है या नही। पत्रकारों ने बाल मजदूरी के बारे में बच्चों से पूछा कि क्या मजबूरियां हैं कि वो सड़कों पर, गलियों में, दुकानों पर काम करने के लिए मजबूर हो जाते हैं?

नोएडा सेक्टर 126 में रह रहा राहुल ने बताया कि हमारे घर के 2 किलोमीटर दूरी पर एक मेट्रो स्टेशन है। जहां पर हर 5 से 7 मिनट में मेट्रो आती जाती रहती हैं और मेट्रो स्टेशन पर भीड़ लगी रहती है। कई ऐसे बच्चे हैं जो मेट्रो पर पैसा मांगने का काम करते हैं। एक 10 वर्ष का बालक भी पैसे मांगने का काम करता है। उसके घर में 8 सदस्य माता-पिता और 6 भाई बहन हैं, जिसमें वह तीसरे नंबर पर है। उसकी माता-पिता भी मांगने का काम करती हैं। वह पूरे दिन में जितने पैसे मांग कर कमाता है वह सभी माता जी को दे देता है। उसी पैसों से उसका घर चलता है। सेक्टर 115 में रह रही दिव्यांशी ने कहा जैसा कि सभी जानते हैं कि लालच एक बुरी बला है। पर लालच किस समय आ जाए यह पता भी नहीं लगा पाते। हमारे आसपास में कुछ ऐसे बच्चे हैं जो कबाड़ा बीनने का काम करते हैं। वह बच्चे पैसे कमाने के लिए काम पर निकल जाते हैं। गुडगांव में रह रहा शिवम ने बताया कि पास में मेट्रो स्टेशन पर 16 वर्ष का लड़का लिट्टी चोखा बेचने का काम करता है। क्योंकि उसके पिताजी शराब पीते हैं। वह कुछ कामकाज नहीं करते और माता जी घर में ही रहती हैं। इसीलिए 16 वर्ष बालक को घर चलाना पड़ता है। दिल्ली में रह रही शिवानी ने बताया कि हमारे घर के पास में एक मार्केट लगती है। जहां पर कई बच्चे मच्छी बेचने का काम करते हैं। उन बच्चों को बिहार से उनका मालिक जबरदस्ती लेकर आया है। यहां पर उनसे काम करवाता है और समय पर पैसे भी नहीं देता है। वह बच्चे यदि गांव जाने के लिए कहते हैं या जिद करते हैं तो वह मना कर देता है। यदि बच्चे ज्यादा जिद करते हैं तो वह मारने भी लगता है। जयपुर में रह रही वंशिका ने बताया कि हमारे झुग्गी के बगल में ही रोज एक मार्केट लगती है और उस मार्केट में झुग्गी में रहने वाले अधिकतर बच्चे सब्जी की दुकान में काम करते हैं। बच्चे मार्केट से सब्जी लेकर आना, दुकान लगवाना और जब दुकान बंद हो तो सब्जी को कैरेट में बंद करवाना, सब्जी बेचने जैसे काम करने के बाद इनको पूरे दिन में 20 से 30 रूपए मिल जाते हैं। सब्जी बेचने के काम में मेहनत ज्यादा लगती है और कुछ सब्जी घर में बनाने के लिए मिल जाती है। नोएडा सेक्टर 70 में रहने वाला परिवर्तित दीपू ने बताया मैं सातवीं कक्षा में पढता हूं। मेरे स्कूल में एक मेरा प्रिय दोस्त भी है, जो मेरी कक्षा में ही पढता है। उसके पिताजी विकलांग हैं। रास्ते में चलते समय उनका एक्सीडेंट हो गया और उनकी टांग टूट गई। अब वह घर पर ही रहते हैं और कुछ नहीं कर पाते। इस कारण मेरे दोस्त को आर्थिक स्थिति भी देखनी पड़ती है और घर की जिम्मेदारियां भी उसी को संभालनी पड़ती हैं। वह रोजाना सुबह स्कूल आता है और स्कूल से जाने के बाद वह आसपास की मार्केट में फल बेचने का काम करता है। दिल्ली की झुग्गी बस्ती में रहने वाले तासीर ने बताया कि इस झुग्गी बस्ती में अधिकतर बच्चे चप्पल के फीते रंगने का काम करते हैं । यह काम बाहर कंपनियों से आता है और बच्चों के माता-पिता भी यह काम करते हैं। इस कारण उनको भी यह काम करना पड़ता है।

बस्ती के बगल में मरे हुए बच्चों को दफना जाते हैं लोग

घरों के बाहर बच्चों की लाशों की हड्डियों से परेशान बस्ती के लोग

ब्यूरो रिपोर्ट

क्या आप जानते हैं इंसान की मृत्यु के बाद उसको दफनाया और जलाया क्यों जाता है? इसका एक कारण है। मृत्यु जिंदगी का वह सच है जिसे कोई नहीं टाल सकता और ना ही इससे कोई मुंह मोड़ सकता है। इस संसार में जिसने भी जन्म लिया है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। जैसे कि हम जानते हैं कि मौत के बाद धर्म के अनुसार इंसान का क्रिया कर्म कर दिया जाता है। किसी ने सब को दफना दिया जाता है तो कहीं उसे जलाने की प्रथा का पालन किया जाता है। जैसे कि हम जानते हैं कि बच्चों की मृत्यु के बाद बच्चों को दफनाया क्यों दिया जाता है? क्योंकि बच्चे फरिश्तों की तरह होते हैं, उनका मन साफ होता है। उनमें किसी भी तरह का कोई सांसारिक छल कपट नहीं पाया जाता है। साधू की तरह बच्चे भी प्रेम, श्रद्धा की अवस्था में होते हैं। इसी वजह से हिंदू धर्म में छोटे बच्चों की जब मृत्यु होती है तो निश्चित स्थान के अभाव में सबको जंगल या किसी सुनसान स्थान, खेत आदि में दफना दिया जाता है। लेकिन बच्चों को दफनाने के बाद क्या होता है? चलिए इस बात को विस्तार से जानते हैं। नोएडा की एक ऐसी बस्ती में पत्रकारों ने दौरा किया और बच्चों से बात की तो उनको यह खबर मिली कि जिस झुग्गी बस्ती में बच्चे रहते हैं उसके बगल में एक गांव है। बच्चों ने बताया कि उस गांव में जिस भी बच्चे की मृत्यु होती है वह हमारी झुग्गी बस्ती के आगे पीछे उन बच्चों को गड्ढे में दफना कर चले जाते हैं। पर बच्चे को दफनाने के बाद उनका काम तो खत्म हो जाता है, पर समस्या यहां परआती है। झुग्गी बस्ती के आसपास के जंगली कुत्ते उस स्थान पर जाते हैं जहां पर बच्चे को दफनाया जाता है। वो कुत्ते उसे खोद कर निकाल लेते हैं और फिर उसको खाते हैं। ये कुत्ते पूरी झुग्गी बस्ती में मरे हुए बच्चों के शरीर की हड्डी को फैला देते हैं जिससे चरों तरफ बदबू आने लगती है और गुस्सा भी आता है। हर हफ्ते और दो हफ्ते में एक से दो व्यक्ति आते रहते हैं और यहां पर बच्चों को दफना कर चले जाते हैं। पर उन्हें कोई बोलने वाला नहीं है। यदि हम दफनाते हुए देख लेते हैं तो हम उन्हें बोलते हैं कि आप इस स्थान पर ना दफनाएं, लेकिन वह मानते नहीं और गड्ढा खोदकर बच्चे को दफना देते हैं। उसके अंदर से कांटे की लकड़ी डाल देते हैं ताकि कुत्ते निकाल ना पाए लेकिन फिर भी वह कुत्ते निकाल लेते हैं।

नोएडा सेक्टर 101 झुग्गी बस्ती में चोरी के बढ़ते मामले

रिपोर्ट दर्ज करवाने पर रिश्वत देकर आसानी छूट जाते हैं चोर

ब्यूरो रिपोर्ट

नोएडा में दिनदहाड़े चोरी के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। यह खबर नोएडा के सेक्टर 101 झुग्गी बस्ती की है। बालकनामा पत्रकारों ने झुग्गी बस्ती में रहने वाले कामकाजी बच्चों से जब इस मामले में बातचीत की तो 11 वर्षीय बालिका ने बताया कि दूर-दूर और अलग-अलग शहरों और गाँव जैसे; बिहार, बंगाल, झांसी, महोबा, लखनऊ, आदि से आकर बच्चे अपने माता-पिता के साथ इस बस्ती में रहते हैं। इस बस्ती में हम लोग अपने आप को सुरक्षित करने की कोशिश करते हैं, लेकिन उसका कोई फायदा नहीं होता। क्योंकि दिनदहाड़े इस झुग्गी बस्ती में चोरी होती है और अब तो यह समस्या बढ़ती जा रही है। अधिकतर बच्चों के माता-पिता अपनी टीन की बनी झुग्गी में ताला लगाकर सुबह से लेकर शाम तक काम पर चले जाते हैं। उनके जाने के बाद उनके घर की रखवाली करने वाला कोई नहीं होता है। क्योंकि इस झुग्गी बस्ती में जो लोग काम करने नहीं जाते उन्हें सिर्फ अपने घर से मतलब होता है। उनका घर सुरक्षित रहना चाहिए और अपने घर के अलावा दूसरे के घर में क्या हो रहा है इस पर कोई ध्यान नहीं देते। हमारी झुग्गी में रात के समय भी चोरी हो जाती है। रात में तीन से चार लोग अपनी गैंग बनाकर बस्ती में आते हैं और उनके पास एक ऐसा हथियार होता है जिससे वह आसानी से चैन को काट देते हैं और उसकी आवाज किसी के कानों तक नहीं जाती। अभी हाल ही में हमारी झुग्गी से 4 मोबाइल और 7000 रूपए चोरी कर लिए गए। पत्रकारों ने बच्चों से पूछा कि क्या इस मामले की रिपोर्ट किसी ने थाने में की ? तो बच्चों ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज करवाने का कोई फायदा नहीं क्योंकि पुलिस चोरों को पकड़ तो लेती है, लेकिन फिर उनसे रिश्वत लेकर छोड़ देती है और हमारी समस्या वैसी की वैसी बानी रहती है।

क्या आपने काला सोना के बारे में सुना हैं? जानें कैसे बच्चे करते हैं इसका इस्तेमाल

ब्यूरो रिपोर्ट

जैसे कि सब जानते हैं कि नशा कई प्रकार का होता है और गंजे के नशे के बारे में तो सभी जानते हैं। अकसर लोग भांग के पेड़ से गांजे का नशा निकाल लेते हैं, जिसे काला सोना के नाम से जाना जाता है। नोएडा में जिस जगह नजर डालोगे उस जगह सड़क के किनारे, घरों के बाहर, जंगल आदि जगहों पर आपको भांग के पेड़ नजर आएंगे। जब पत्रकारों ने इस जाँच पड़ताल की और इसका पता लगाया कि क्या बच्चे भी इस कार्य को करते हैं तो हैरान कर देने वाली बात सामने आयी। पत्रकारों को पता चला कि बच्चे बिल्कुल अलग तरीके से इसका नशा करते हैं। वह भांग की गीली पत्ती को हाथ में तेल लगा कर लगभग एक से डेढ़ घंटा तेज तेज से मसलते हैं और लगातार मसलने के बाद हाथ में पत्ती का जो मलहम जम जाता है, वही काला सोना बन जाता है। बच्चे उसे निकलकर एक पन्नी में रख लेते हैं और फिर रोजाना बच्चे उसका नशा करते हैं।

यही नहीं वो इसका गोला बना बना कर छोटी-छोटी पन्नी में पैक करके 100, 200, 250 रूपए में बेचते भी हैं। इस तरह बच्चे इसका खुद भी नशा करते हैं और इसे खुलेआम बेचते भी हैं। लेकिन यह बात उनके माता-पिता को नहीं पता होती कि उनके बच्चे इस तरह का नशा करते हैं। जब बच्चे यह नशा बाहर बेचते हैं तो वह कई बार पुलिस के चंगुल से बचकर निकल जाते हैं और यदि पकड़े जाते हैं तो कुछ पैसे देकर छूट जाते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चों को काम पर तो रख लेते हैं लेकिन थोड़ी सी गलती होने पर उन्हें बिना पैसे दिए काम से निकल देते हैं

बातूनी रिपोर्टर अतुल,
बालकनामा रिपोर्टर असलम

एक ओर जहां परीक्षाओं का मौसम शुरू हो गया है और बच्चों की दसवीं के बोर्ड की परीक्षा भी हो चुकी है। वहीं दूसरी ओर सभी बच्चों की दो महीने की छुट्टी शुरू हो गयी है। छुट्टियां शुरू होते ही जो बच्चे स्कूल जाते थे वो कोई न कोई काम करके पैसा कमाना चाहते हैं। ऐसा ही एक बच्चा जिसका नाम अतुल है उसकी उम्र 15 साल है। उसने दसवीं कक्षा की परीक्षा दी है और अब वह काम की तलाश कर रहा है। अतुल मॉल में काम ढूंढने की तलाश में गया तो अतुल को एक कपड़े की दुकान में काम मिल गया। जहां अतुल काम करता है वहां पर अतुल की तरह एक और लड़का काम करता है जो अतुल से 2 साल बड़ा है। वह अतुल से बहुत ही अच्छे से बातचीत करता है। अतुल को इस दुकान पर सुबह आठ से रात के आठ बजे तक काम करना पड़ता था। अतुल को यहां काम करने के महीने की 12000 रूपए सैलरी मिलती थी। अतुल ठीक-ठाक काम करता था और उसको कुछ दिन लगे थे काम सीखने में, लेकिन उसने 2 से 3 दिनों में काम सीख लिया। अब किसी से कैसे बात करनी है, मोलभाव करना ये सब वो अच्छे से सीख गया था। एक दिन दुकान के मालिक से अतुल की तू तू मैं मैं हो गई और दुकान के मालिक ने उसको गाली दी और उससे कहने लगे कि तुम्हारे पिताजी तो दारु पीकर पड़े रहते हैं। यह बात अतुल को बहुत बुरी लगी और उसने भी मालिक को बहुत बुरा भला बोल दिया। इसके बाद मालिक ने अतुल को दुकान से भगा दिया। अतुल ने दुकान पर जो चार दिन काम किया था उसके मालिक ने इस काम के उसे एक रुपया भी नहीं दिया। अतुल इस बात से बहुत दुखी है और कहा कि जो लोग 18 साल से कम उम्र के बच्चों को काम पर रख तो लेते हैं लेकिन उनसे बहुत ज्यादा मेहनत करवाते हैं और उन्हें पैसे भी नहीं देते हैं। वो बच्चों से कुछ दिन काम करवाते हैं, उन्हें बुरा भला बोलते हैं और काम निकलने के बाद उन्हें भगा देते हैं। अतुल अब काम नहीं करना चाहता और जब वह 18 साल से बड़ा हो जाएगा तो ऑनलाइन जॉब करना चाहता है।

पानी की समस्या से परेशान बच्चे

बातूनी रिपोर्टर कोमल व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

ऊपर से गर्मी और जीवनयापन करने के लिए सबसे जरुरी पानी ही अगर दूर से लाना पड़े तो फिर क्या हाल हो ? लखनऊ की बस्ती के बच्चे आजकल इसी समस्या से परेशान हैं। उनके जीवनयापन के लिए न तो उनको बिजली मिल रही है और न ही पानी। इतनी धूप में बच्चों को दूर दूर जाकर पानी भरकर लाना पड़ता है। इतने बड़े बड़े पानी के डिब्बे उनको भरकर अपने घर लाना पड़ता है, जिससे बच्चे बहुत थक जाते हैं और उनके हाथों में भी दर्द हो जाता है।

बच्चों का कहना है कि जहां पर हम लोग रहते हैं वहां पर पानी की बहुत समस्या है। उनको बहुत दूर से पानी भरकर लाना पड़ता है, जिसके कारण वो थक जाते हैं। अगर वो पानी भरने ना जाएं तो घर में खाना भी न बन पाए और घर की साफ सफाई भी बिना पानी के संभव नहीं है। इसलिए दिनभर बच्चों को अपनी गुजर बसर करने के लिए इतनी दूर से पानी भरकर लाना पड़ता है।

कैसे कर पाएंगे बच्चे अपनी शिक्षा प्राप्त

बातूनी रिपोर्ट अंजलि व रिपोर्ट संगीता लखनऊ

जैसा कि यह बात तों हम सभी लोग जानते होंगे हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों को अपनी शिक्षा के लिए भी उनको काफी संघर्ष करना पड़ता है तब जाकर कहीं ना कहीं वह शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं और बहुत से ऐसे भी बच्चे हैं जिनको अपनी शिक्षा के लिए लड़ना नहीं पड़ता है और जिन बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का मौका भी मिलता है तो वह शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं क्योंकि वह गलत संगत में पड़ जाते हैं जिसके कारण वह स्कूल ना जाके गलत संगत में पड़कर गलत गलत काम करना सुरु कर देते हैं और जब उनके अभिभावक उनको स्कूल भेजनें की बात करते हैं तों वह आपने अभिभावक से लड़ जाते हैं हम स्कूल नहीं जाएंगे की हम स्कूल नहीं जायेगे सारा दिन कूड़ा कबाड़ा

चुने का काम करते रहते या फिर पतंग उड़ाते रहते हैं या तो इधर-उधर घूमते रहते हैं पर स्कूल नहीं जाते हैं पर जो बच्चे पढ़ना लिखना चाहते हैं तो उनको बिल्कुल भी मौका नहीं मिलता है पढ़ने लिखने का या फिर वह घर के काम में बन जाते हैं या फिर वह बाहर का काम करने में बन्ध जाते हैं जिसके कारण वह स्कूल नहीं जा पाते हैं और अगर वह कभी अपने शिक्षा की बात भी करते हैं तो उनके अभिभावक डांट देते हैं अगर तुम पढ़ाई करोगी तो घर का काम कौन करेगा या फिर बाहर काम करवाने कौन जाएगा इसी तरह के अनेकों कामों में बच्चे बंद करने जाते हैं और मजबूरी मैं अपनी शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाते हैं। क्योंकि अगर वह अपनी शिक्षा प्राप्त करने के चक्कर में पढ़ेंगे तो घर का खर्चा कैसे चलेगा जिसके कारण वह मजबूरी मैं अपनी शिक्षा छोड़ कर अनेक कामों में लग जाते हैं, ताकि वह घर चलाने में घरवालों की मदद कर सकें।

जोखिमभरे काम ने आदर्श को बनाया मजबूत

कांच की फैक्ट्री में काम करने से आयी बहुत मुश्किलें

रिपोर्टर आदर्श

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जब जीएमडी स्लम का दौरा किया तो पता चला कि एक लड़का जिसका नाम आदर्श है जो कांच की फैक्ट्री में कांच उठाने का काम करता है। जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने आदर्श से बात की तो आदर्श ने बताया कि भैया मेरे परिवार में मेरे पिताजी की मृत्यु होने के बाद मेरी मां को कोठियों में खाना बनाने का काम करना पड़ा। लेकिन मेरी मां की तबीयत खराब हो जाने पर मुझे अपना घर चलने के लिए कुछ ना कुछ काम करना था तो मुझे एक आदमी ने कांच की फैक्ट्री में काम पर लगवा दिया। मैं कांच की फैक्ट्री में कांच उठाने का काम करने लगा। मुझे इस काम को करने के लिए हर महीने 7000 रूपए मिलते हैं।

मैं सुबह दस बजे से शाम के छह बजे तक काम करता हूं। पत्रकार ने आदर्श से पूछा कि आपको काम करने में क्या क्या कठिनाइयां आती है तो आदर्श ने बताया कि भैया कांच उठाते समय एक बार मेरी पूरी उंगली कट गई थी और जब मैं कांच उठाने के काम पर लगा था तो मुझे इस काम का इतना अनुभव नहीं था तो मेरा हर दिन हाथ काटता था। मेरे हाथों से बहुत खून निकलता था, लेकिन मैं पूरी मेहनत से यह काम करता था। अब मैं यह काम करता हूं तो मेरा हाथ भी नहीं करता और तो और अब मेरे को एक खरोच भी नहीं आती, बस कभी कभी ज्यादा भारी कांच उठाते समय मेरा हाथ ज्यादा टाइट होने के कारण कांच भी टूट जाते हैं और कांच मेरे हाथों में भी घुस जाते हैं। बस मुझे उससे ही डर लगता है। मुझे लगता है कि काम करने में कोई बुराई नहीं है। आप मेहनत से काम करोगे तो आपको हर काम आसान लगेगा। आप बोझ की तरह करोगे तो काम आपको बहुत मुश्किल लगेगा और आपसे कभी होगा ही नहीं।

घर में सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण पढ़ाई से दूर होते बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

अगर घर में लोग ज्यादा हो तो समस्याएं भी ज्यादा होती हैं और इसका सामना भी घर के सभी सदस्यों को करना पड़ता हैं। जब घर में संख्या ज्यादा हो होती है तो बच्चों को पढ़ने में बहुत समस्या होती है। वो ठीक से पढ़ नहीं पाते हैं और उनकी पूरी जिंदगी काम करने में निकल जाती है। अगर वह अपने घर में अपनी पढ़ाई की बात करते भी हैं तो उनके अभिभावक गुस्सा होने लगते हैं और बोलते हैं कि सब पढ़ाई कर लो घर की समस्या मत देखो। अगर सब पढ़ाई करोगे तो घर का खर्चा कैसे चलेगा। जिस कारण मजबूरी में बच्चों को काम करना पड़ता है। लखनऊ के बच्चों ने बालकनामा पत्रकार को बताया कि दीदी यहां के बहुत से ऐसे बच्चे हैं जो घर में ज्यादा सदस्य होने के कारण पढ़ नहीं पाते हैं। वह पढ़ना चाहते हैं, लेकिन जब वह अपने घर में अपनी पढ़ाई की बात करते हैं तो उनके अभिभावक गुस्सा होने लगते हैं और बोलते हैं कि अगर आप सब पढ़ाई करोगे तो फिर घर का खर्चा कैसे चलेगा ? जिसके कारण बच्चे मजबूरी में अनेक प्रकार के काम करने लगते हैं, ताकि वह अपने घर वालों की मदद कर सकें।

बढ़ते तापमान और गर्मी से परेशान बच्चे

बातूनी रिपोटर ममता व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

गर्मी के मौसम में सुबह से ही बहुत तेज धूप निकल जाती है और जैसे जैसे दिन बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे तापमान भी बढ़ने लगता है। तापमान बढ़ने से घर के बाहर निकलना दूभर हो जाता है। लेकिन जो बच्चे सड़कों पर काम करते हैं उनके लिए पूरे दिन धूप में काम करना कितना मुश्किल होता है। बच्चे तेज धूप में घर में रहने के बजाय सड़कों पर घूम-घूम कर सामान बेचते हैं, कबाड़ा बीनते हैं और जो लड़कियां घरों में रहकर काम करती हैं वो धूप में बैठकर जब बर्तन धोते हैं तो उनके सिर में बहुत दर्द होने लगता है। बहुत गर्मी से उनको चक्कर भी आ जाते हैं और वो बेहोश भी हो जाते हैं। लेकिन उनको मजबूरी में ये काम करने पड़ते हैं अगर बच्चे काम नहीं करेंगे तो वो अपने घर वालों की मदद कैसे कर पाएंगे।

बाल विवाह का शिकार होते बच्चे

अभिभावक के प्रेशर में लड़कियां मजबूरी में करती हैं कम उम्र में शादियां

ब्यूरो रिपोर्ट

हमारे भारत में बाल विवाह की जनसंख्या धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है और इस पर कोई रोक नहीं लगा पा रहा है। जिसके कारण हजारों लड़कियों की जिंदगी बर्बाद हो रही है जिसमें बच्चों के अभिभावक उनकी इस बबार्दी के भली-भांति भागी है। जब हमारे लखनऊ के बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से बात की तो बच्चों से पूछा कि क्या आपको ऐसा लगता है कि आपकी छोटी उम्र में शादी नहीं होनी चाहिए थी? तो बच्चों ने कहा कि किसी भी बच्चे की छोटी उम्र में शादी नहीं होनी चाहिए। छोटी उम्र में शादी होना मतलब उस लड़की का जीवन बर्बाद होना। बच्चों ने बताया कि जब हमारे अभिभावक हमारी शादियां करा रहे थे तब हमें सब कुछ अच्छा लग रहा था, लेकिन अब पता चल रहा है कि कभी भी छोटी उम्र में शादी नहीं होनी चाहिए। उस समय हम छोटे थे तो क्या हमारे अभिभावक भी छोटे थे जिन्होंने हमारी शादी तय कर दी और हमारी छोटी उम्र में शादी कर दी। वह तो समझदार थे और उनको समझदारी से काम लेना चाहिए था। उन बच्चों पर शादी का इतना प्रेशर डाला गया, जिसके कारण उनको मजबूरन शादी करनी पडती हैं। अब वह लड़कियां बहुत बड़ी परेशानी में फंस चुकी हैं और कुछ करके भी इससे नहीं निकल सकती हैं।

लड़कियों को ही नहीं लड़कों को भी देनी पड़ती हैं हजारों कुर्बानियां

ब्यूरो रिपोर्ट

अधिकतर लोगों की धारणा बन गयी है कि जब पढ़ाई की बात आती है तो सबसे पहले घरवाले लड़की को पढ़ाई करने से मना करते हैं। सिर्फ लड़कियों से ही बोला जाता है कि वह घर की देखभाल और चूल्हा चौका करें। लेकिन ऐसा सोचना गलत है क्योंकि लड़कों पर भी परिवार का बहुत प्रेशर होता है। अपना घर चलाने के लिए कि वह पढ़ाई लिखाई छोड़ देते हैं। अपने अभिभावक की मदद करने के किये उनको काम करना पड़ता है। बच्चों ने बताया कि कभी-कभी घर की परेशानियां इतनी बढ़ जाती हैं कि उनको अपने घर की समस्याओं को सही करने के लिए अपनी पढ़ाई तक छोड़नी पडती है और मजबूरी में घर के और बाहर के काम करने पड़ते हैं। मानते हैं कि हमें आने जाने के लिए हमारे अभिभावक इतना रोकते टोकते नहीं हैं, लेकिन उन्हें पता है कि कभी-कभी घर की स्थिति इतनी खराब हो जाने के कारण हमें अपनी पढ़ाई का बलिदान देना पड़ता है और अपने घर के हालातों को भी देखना पड़ता है। साथ ही बच्चों ने यह भी बताया कि कभी-कभी हमें अपने अभिभावक से ताने भी सुनने को मिलते हैं, कि तुम घर में सबसे बड़े हो या फिर तुम घर के एकलौते लड़के हो अगर तुम कुछ नहीं करोगे तो कौन करेगा ? कौन हमारी मदद करेगा ? अगर तुम अभी हमारा साथ नहीं दोगे तो आगे तुमसे हमें कोई उम्मीद नहीं होगी।

अब्दुल करता है एक रुपए में एक ईट उठाने का काम

बातुनी रिपोर्टर अब्दुल, बालकनामा रिपोर्टर असलम

हरियाणा पत्रकार असलम ने जब कसैला की झुग्गियों का दौरा किया तो हमारे पत्रकारों को पता चला है कि कुछ बच्चे हैं जो ईट उठाने का काम करते हैं। उन बच्चों में से एक बच्चे अब्दुल से हमारे पत्रकार ने बात की तो अब्दुल ने बताया कि हम सुबह सात बजे से लेकर दोपहर दो बजे तक ईट उठाने का काम करते हैं। हमारी झुग्गियों के पास ठेकेदार आते हैं और सभी बच्चों से कहते हैं कि जो जितनी ईंटे उठाएगा उसे उतने रुपए मिलेंगे। वह एक ईंट उठाने के एक रुपए देते हैं तो बच्चे अगर 100 ईंट उठाकर लाते तो ठेकेदार उन्हें 100 रूपए देते हैं। अगर कोई 250 ईंट उठता हैं तो ठेकेदार 250 रूपए देते हैं। यह बच्चे पूरा दिन अपनी

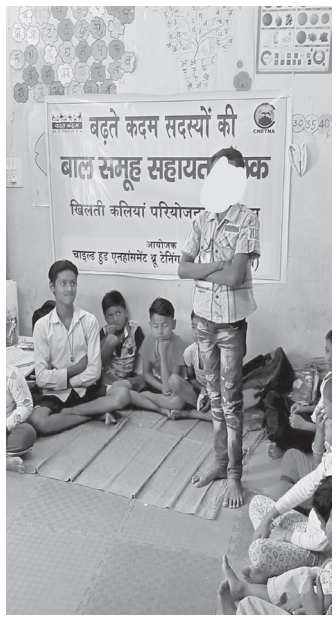

झुग्गियों में घूमते रहते हैं और इन बच्चों को कहीं एक भी ईंट का टुकड़ा पड़ा मिल जाता हैं तो यह उसे उठाकर एक जगह पर इकट्ठा कर लेते हैं। जब ठेकेदार आता तो यह लोग ईट को गिन कर ठेकेदार को दे देते हैं। अब्दुल से पत्रकार ने पूछा कि आपको यह काम करने में कोई परेशानी तो नहीं आती है तो अब्दुल ने बताया कि भैया ईंट को ढूंढते समय कई बार हमारे हाथों में चोट लग जाती थी और ईंट उठाने का काम ऐसा था कि हम किसी से बिना पूछे और कहीं से भी ईंट उठा लेते थे तो हमें कई बार मार भी पड़ी है। यह काम अच्छा तो है लेकिन कई बार इस काम के चलते हमारे घरवालों को और हमें भी बहुत ज्यादा मार खानी पड़ी है। यह काम करके मुझे जो भी पैसे मिलते हैं, उसे मैं अपने घरवालों को दे देता हूं, जिससे मेरी माता जी का कुछ खर्चा कम हो जाता है।

काश जीवेश का परिवार अच्छा होता तो जीवेश पढ़ पाता

रिपोर्टर -जुबेदा

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जसोला की झुग्गियों का दौरा किया तो पत्रकार को पता चला कि एक लड़का जिसका नाम जीवेश है, जो पहले 12वीं करंतु अब वह कारखाने में काम करता है। क्योंकि उसके घरवाले अब पढ़ाना नहीं चाहते और उसकी उम्र 18 साल हो गई है। उसके घरवाले जीवेश से सिर्फ काम करने के लिए कहते रहते हैं। उनकी इस बात से तंग आकर जीवेश प्लाई उठाने का काम करने लगा। जब पत्रकार ने उससे बातचीत की और पूछा कि क्या यह काम करना उसको अच्छा लगता है और इस काम को करने में उसको क्या-क्या कठिनाइयां आती हैं तो जीवेश ने बताया कि मुझे यह काम करना अच्छा नहीं लगता और कभी-कभी लिफ्ट में मेरा हाथ आ जाता है जिससे मुझे चोट भी लग जाती है। प्लाई उठाते समय वह मेरे हाथों में घुस जाती है और हाथ से खून भी निकलने लगता है। मैं जो भी पैसे कमाता हूं मेरी माताजी मुझसे वह पैसे ले लेती हैं। अगर मैं कुछ पैसे नहीं देता तो वो मुझे मरती हैं। इसलिए मैं एक बार घर से भाग भी गया था, लेकिन फिर मेरे घर वालों ने मुझे ढूंढा और मुझे घर पर बुलाया। उन्होंने मुझे एक दिन खाना तक नहीं दिया और मुझे बहुत मारा। मैं अपनी जिंदगी से बहुत तंग आ चुका हूं। अब मैं अपने घरवालों से दूर चला गया हूं और अपने बड़े पापा के साथ रहता हूं। उनके साथ ही प्लाई उठाने का काम करता हूं। मेरे बड़े पापा मुझे बहुत मारते हैं, लेकिन वह बहुत दिल के बहुत अच्छे हैं। उनके साथ प्लाई उठाने का काम करना बहुत अच्छा लगता है। मैं सोचता हूं कि काश मेरे पापा भी मेरे बड़े पापा जैसे होते तो क्या पता आज मैं पढ़ लिख कर कोई अच्छी सी नौकरी करता। मुझे बहुत अफसोस होता है कि मेरे परिवारवाले इतने बुरे हैं कि मुझे बारहवी कक्षा से हटाकर पढ़ाई से एकदम बेदखल कर दिया और प्लाई उठाने के काम पर लगा दिया। मैं जो पैसे कमाता हूं वो उसे छीन लेते हैं और मुझे खाने को भी नहीं देते हैं। काश मेरे परिवारवाले अच्छे होते तो मैं भी कुछ बन जाता।

चेतना संस्था ने बाल मजदूरी से निकाला सुमन को और स्कूल में करवाया दाखिला

बातूनी रिपोर्टर सुमन,
बालकनामा रिपोर्टर असलम

पत्रकारों ने जब बादशाहपुर का दौरा किया तो पता चला कि जो बच्चा बचपन से ही बर्फ की दुकान पर काम करता था और बर्फ बेचकर अपना घर चलाता था, उसका भी स्कूल में एडमिशन हो गया है तो यह जानकार वो बहुत खुश हुए। पत्रकार उसे बच्चे सुमन (परिवर्तित नाम) से मिले और उससे बात की। सुमन की उम्र 10 साल है और जब सुमन को पता चला कि उसका स्कूल में दाखिला हो गया है तो उसे इस बात पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह अब चौथी कक्षा में पढ़ेगी। पत्रकार ने जब उससे पूछा कि आपको स्कूल में कैसा लगता है तो सुमन ने बताया कि भैया स्कूल बहुत बड़ा है और स्कूल में मेरे बहुत सारे दोस्त भी बन चुके हैं। अब तो मैं अपनी क्लास की मॉनिटर भी हूं और मेरी क्लास की प्रधानाचार्य जी भी मुझे बहुत ज्यादा मानती हैं क्योंकि मैं पढ़ाई में बहुत अच्छी हूं। सुमन को लगता था

कि वह कभी स्कूल नहीं जा पाएगी, लेकिन जब सुमन का स्कूल में दाखिला हो गया है तो सुमन को लगता है कि उसका सपना पूरा हो गया है। इस सपने को पूरा करने में वह चेतना संस्था का आभार व्यक्त करती है। वह कहती है कि अगर चेतना संस्था मेरी मदद नहीं करती तो मैं भी उन बच्चों की तरह अभी कहीं बाल मजदूरी करती होती या फिर मेरे घरवाले मेरी शादी करवा देते। लेकिन अब मैं स्कूल जा रही हूं और अपने घरवालों का नाम भी रोशन करूंगी। मैं आज जहां भी पहुंची हूं यह चेतना संस्था की बदौलत संभव हो पाया है। मैं चेतना संस्था का दिल से धन्यवाद करती हूं।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत करने को तैयार हैं बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

जब सफल बनना हो तो हमें बहुत मेहनत करनी पड़ती है, ताकि हमें सफलता मिल सके। हमारे लखनऊ के सड़क एवं काम कामकाजी बच्चे जिस भी हाल में रहते हों लेकिन उनके अंदर कुछ करने और कुछ बनने का जूनून जरूर रहता है। ये बच्चे बहुत कुछ करना चाहते हैं। इनमें से कोई क्रिकेटर, टीचर, पुलिस आदि बनना चाहता है। लेकिन जब उनसे यह पूछा गया कि अगर आप यह सब बनना चाहते हैं लेकिन क्या आपको पता है कि इसके लिए आपको क्या करना पड़ेगा ? बच्चों ने बोला कि दीदी हमें पता है कि अगर हमें जिंदगी मे कुछ बनना है तो हमें सबसे पहले पढ़ाई से ही शुरूआता करनी पड़ेगी और पढ़ाई करने के लिए 5 बजे उठना पड़ेग। पहले काम पर जाना पड़ेगा और वापस आकर स्कूल जाना पड़ेगा। स्कूल से आकर फिर काम पर जाना पड़ेगा और फिर खुद के लिए समय निकाल कर पढ़ाई भी की पड़ेगी। समय मिलने पर घर का काम भी करना पड़ेगा। बच्चों ने कहा कि मानते हैं कि रास्ता थोड़ा मुश्किल है, लेकिन अगर हम मेहनत नहीं करेंगे तो हम कुछ भी नहीं कर पाएंगे।

स्कूल से वंचित बच्ची, बकरी का देखभाल और घर के कामों में उलझा बचपन

बातूनी रिपोर्टर कामिनी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

सड़क एवं कामकाजी बच्चों में से कई सारे ऐसे बच्चे होते हैं जो पढ़ना चाहते हैं, लेकिन अपने घर की स्थिति खराब होने के कारण वह पढ़ नहीं पाते हैं , यही वजह है कि घरवाले उनको कई प्रकार के कामों में लगा देते हैं , जिससे उनके घर का खर्चा चल सके। इस कारण बहुत से कामकाजी बच्चे आगे नहीं बढ़ पाते हैं। लखनऊ की बस्ती में रहने वाली बच्ची पढ़ना तो चाहती है, लेकिन मजबूरी के कारण पढ़ नहीं सकती। उसका बहुत मन करता है कि वह भी दूसरे बच्चों के जैसे स्कूल जाये और पढ़ाई करे लेकिन स्कूल जाने के बजाय उसको सुबह शाम बकरी को चराने जाना होता है। और जंगल जाकर उसके लिए चारे का इंतजाम भी करना पड़ता है। बकरियों के साथ ही उसको घर का भी काम करना होता है, जिसके कारण वह स्कूल नहीं जा पाती।

बच्चे भीख मांगकर मिले हुए पैसों का करते हैं दुरूपयोग

बातूनी रिपोर्टर अंजली व रिपोर्ट संगीता लखनऊ

ज्यादातर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अभिभावक काम पर जाने के कारण अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते, जिसके कारण बच्चे गलत संगती में पड़कर गलत काम करना शुरू कर देते हैं। ये बच्चे अनेक प्रकार के नशीले पदार्थों का सेवन करने लगते हैं और गलत कामों में लिप्त हो जाते हैं। ये दूसरे बच्चों के साथ भीख मांगने लगते हैं और इनके माता-पिता को इस बात की खबर भी नहीं होती है। लखनऊ के कामकाजी बच्चे भी अपने अभिभावकों की अनुपस्थिति में भीख मांगने जाते हैं और उनके अभिभावक को इसकी भनक तक नहीं लगती है। बच्चों ने पत्रकार को बताया कि जब उनके अभिभावक काम पर चले जाते हैं तब वह भीख मांगने के लिए जाते हैं और जो भी पैसे उनको भीख मांगने पर मिलते हैं उन पैसों को वह घर पर ना देकर उससे अनेक प्रकार नशे करते हैं और उन पैसों का गलत इस्तेमाल करते हैं।

घरवालों की खुशियों के लिए

मोहम्मद कैफ ने दुकान पर की नौकरी मिले पैसों से धूमधाम से मनाई ईद

बातूनी रिपोर्टर मोहम्मद कैफ

यह खबर मोहम्मद की है। मोहम्मद 15 साल का है और दसवीं कक्षा में पढ़ता है। वह अपनी माता जी के साथ चूड़ी की रेड़ी लगाता है। उसने अपने सबसे बड़े त्यौहार ईद के लिए बहुत कुछ सोच रखा था लेकिन मोहम्मद कैफ के पास इतने पैसे नहीं थे कि वह अपनी पसंद के कपड़े खरीद सके और अच्छे से इस त्यौहार की तैयारी कर सके। मोहम्मद कैफ अपनी माता जी के साथ रेड़ी लगाने का काम करता है, लेकिन रेड़ी से ज्यादा कमाई ना होने के कारण उसकी ज्यादा कमाई नहीं हो पति है। क्योंकि आजकल मोहम्मद कैफ की रेड़ी के आसपास चार से पांच और रेडियां भी लगती हैं, जिससे

ग्राहक बंट जाते हैं। पहले सिर्फ एक ही चूड़ी की रेड़ी लगती थी जो मोहम्मद कैफ की माताजी लगाती थी और उनकी इससे ठीक थक कमाई हो जाती थी। अब कमाई न होने के कारण मोहम्मद को टेंशन है कि अब उसकी ईद कैसे मानेगी। इसलिए मोहम्मद कैफ ने एक किराना दुकान पर एक महीना काम किया और दुकानदार ने उसे 7000 रूपए दिए, जिसमें से मोहम्मद कैफ ने ३000 रूपए से अपने घरवालों और अपने कपड़ों पर खर्च किये और बाकी जो पैसे बचे उससे उनसे धूमधाम से ईद मनाई। मोहम्मद कैफ ने इतनी मेहनत की ताकि उसके घरवाले अच्छे से ईद मना सकें। उसकी इस मेहनत के लिए हम बालकनामा पत्रकार उसे सलूट करते हैं। मोहम्मद ने अपने घरवालों की खुशियों के लिए एक महीना लगातार किराना स्टोर पर काम किया और अपने घरवालों के साथ मिलकर धूमधाम से ईद मनाई।

पढ़-लिखकर आर्मी अफसर बनाना चाहती है रोजी लेकिन घरवाले उससे कराते हैं कूड़ा उठाने का काम

बातूनी रिपोर्टर मिंटू

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जब जीएमडी का दौरा किया तो पता चला कि एक लड़की जिसका नाम रोजी है, वह 12 साल है। रोजी कूड़ा उठाने का काम करती है। वह अपनी मम्मी और दो भाईयों गुलशन और राजू के साथ रहती है। उसकी माताजी बंगाल की रहने वाली हैं और उसके पिताजी राजस्थान के रहने वाले हैं। रोजी नौवीं कक्षा में पढ़ती है और वह इस वर्ष दसवीं कक्षा मे पहुंच चुकी है। रोजी का सपना है कि वह एक आर्मी ऑफिसर बने और उसे पूरा विश्वास हैं कि आगे चलकर उसको आर्मी की नौकरी भी मिल जाएगी क्योंकि वह बहुत ज्यादा तेज भागती है। वह खेलों में बहुत अच्छी है और बहुत मेहनत भी करती है। उसके घर वाले कूड़ा उठाने का काम करते हैं और रोजी को बहुत कम स्कूल जाने देते हैं। वह उससे अपने साथ कूड़ा उठाने का काम काम करवाते हैं। पहले रोजी बहुत सुंदर दिखती थी, लेकिन जब से उसके परिवारवालों ने उसको अपने साथ काम पर ले जाना शुरू किया है तो उन्होंने रोजी के पूरे बाल काट दिए है और उसको गंजा कर दिया। जिससे रोजी ने तंग आकर स्कूल जाना बिल्कुल ही बंद कर दिया है। स्कूल न जाने के कारण उनकी मैडम उसके घर आए और रोजी को बहुत समझाया तब रोजी स्कूल जाने लगी। पत्रकारों ने रोजी से बातचीत की तो रोज ही ने बताया कि भैया मेरे दोनों भाई भी स्कूल जाते थे और मेरी तरह वह भी अब कूड़ा उठाने का काम करते हैं और स्कूल नहीं जाते हैं। मेरे माता-पिता को कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम स्कूल नहीं जाते। हमसे मेरे परिवारवाले सिर्फ कचरा उठाने का काम करवाते हैं और हमें साफ सुथरा भी नहीं रखते हैं और हमें ना ही कपड़े लेकर देते हैं। हम पूरा दिन गंदे रहते हैं और हमसे बहुत बदबू भी आती है। ऐसी जिंदगी रोजी बिल्कुल नहीं जीना चाहती है। वह चाहती है कि वह साफ-सुथरी रहे और अच्छी जिंदगी जिए और आगे चलकर आर्मी ऑफिसर बनें।

क्या पढ़ने लिखने की उम्र में भीख मांगने वाले बच्चों को मिल पायेगी शिक्षा ?

बातूनी रिपोर्टर ज्योति, बालकनामा रिपोर्टर असलम

आपने बच्चों को भीख मांगते देखा हैं। कभी उन बच्चों को कोई पैसे देकर जाता है, कोई नहीं। उल्टा लोग उन बच्चों को मारते हैं और धक्का देकर निकल जाते हैं। इनके बारे में सोचने वाला कोई नहीं होता। यह अपने हालातों के कारण अपने सपने पूरे नहीं कर पाते। यह अपनी उम्र के दूसरे बच्चों के साथ स्कूल जाना चाहते हैं लेकिन जा नहीं पाते और उनको स्कूल जाते देखकर तो मुस्कुराते हैं मगर बाद में वह बहुत उदास हो जाते हैं। क्योंकि वह सोचते हैं हम तो स्कूल कभी जा ही नहीं सकते। वह बच्चे जब अपने मां-बाप को कहते हैं हमें भीख नहीं मांगना है तो उनके मां-बाप उन्हें जबरदस्ती भेजते हैं और उनके साथ बहुत भेदभाव करते हैं। जब बच्चों को कोई पैसे देकर नहीं जाता है और वह खाली हाथ घर लौटते हैं तो उनके पिता बहुत मारते हैं। क्योंकि इनके पिता को दारु पीने के अलावा और कोई काम नहीं आता है। उन बच्चों ने कहा कि मम्मी आप लोग काम पर जा सकते हो फिर हमें काम पर क्यों भेजती हो। मम्मी कहती हैं की हमारे यहां यह रिवाज नहीं है घर की औरतें काम पर जाए फिर वह बच्चा कहता है कि पापा तो जा सकते हैं तो पापा काम पर क्यों नहीं जाते है। उनकी मम्मी ने कहा तुम्हारे पापा काम पर जाते हैं तो उन्हें पैसा मिलता है वह दारू में उड़ा देते हैं इसलिए हम तुम्हीं को काम करने भेजते हैं मगर तुम भी पैसे नहीं लाते हो। तो मम्मी यह कानूनी अपराध है आप हमें काम पर नहीं भेज सकती क्योंकि हमारी उम्र कम है इसलिए 18 साल की उम्र वाले बच्चों को कोई भी काम करने नहीं देता है। बच्चों को इस उमर में पढ़ाया लिखाया जाता है की बच्चा इस काबिल हो जाये कि वह अपने सपने को पूरा कर सके। आप हमारी माँ होकर हमे काम पर भेजती हो। हमारे घर के पास एक सेंटर पड़ता है जहां पर भैया दीदी पढ़ाते हैं आप वहां पर हमें भेजोगे तो वह भैया देवी हमारा स्कूल में दाखिला करवा देंगे । फिर उसकी मम्मी मान गई उन बच्चों ने भीख मांगना छोड़ दिया और वह अभी स्कूल जाने लगी उन्हें स्कूल जाना बहुत ज्यादा अच्छा लगता है।

अपनी जान को जोखिम में डालकर दीवार पर चढ़कर पेड़ों से आम तोड़ते हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर गोल्डी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

यह बात तो हम सभी लोग जानते हैं कि आजकल आम का मौसम है जिसके कारण पेड़ो में बहुत आम लगे हैं। सड़क पर काम करने वाले बच्चे आम तोड़ने के लिए काफी ऊंची-ऊंची दीवार और बड़े-बड़े पेड़ो पर चढ़ जाते हैं। जब वहां के मालिक उन बच्चों को पेड़ पर चढ़ा हुआ देख कर उनको पकड़ने के लिए आते हैं तो बच्चे काफी ऊंचे पेड़ से कूद जाते। उनको यह डर नहीं लगता है कि अगर वह इतनी ऊंची दीवार से कूदेंगे तो उनके पैर हाथ भी टूट सकते हैं। इस बात को नजरअंदाज करके बच्चे आम तोड़ते हैं। हमारे पत्रकार ने जब लखनऊ की बस्ती में रिपोर्टर बैठक की और कम्युनिटी विजिट की तो देखा बहुत सारे बच्चे दीवार पर चढ़कर पेड़ों से आम तोड़ रहे थे। पत्रकार ने बच्चों से कहा कि वे दीवार से चढ़ कर पेड़ पर जाकर आम तोड़ रहें हो और अगर पैर फिसल जाए और गिर जाओ तो तुम्हारे हाथ पैर भी टूट सकते हैं। पत्रकार की बात सुनकर बच्चों ने बताया कि यह बच्चे बिल्कुल भी नहीं डरते हैं और यह सारे बच्चे रोज इस दीवार पर चढ़कर आम तोड़ते हैं और इनके अभिभावक भी इनको नहीं डाटते हैं और ये रोज इस दीवार पर चढ़कर आम तोड़ते हैं।

बच्चों को अगवा करने की घटनाएं हुई तेज, किसी न किसी बहाने से किडनैपर कर रहे हैं उनको अगवा

ब्यूरो रिपोर्ट

हम जानते हैं कि बच्चों को कुछ भी खाने-पीने की चीज देते हैं तो बच्चे तुरंत लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। लेकिन बच्चे इस बात से अनजान होते हैं कि इसके खाने से उनके साथ अच्छा होगा या बुरा। नोएडा सेक्टर 78 की झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों से बात की तो बच्चों ने कहा कि हमारी झुग्गी बस्ती में रोजाना बाबा लोग पैसे मांगने के लिए आते रहते हैं। कुछ ऐसे बाबा भी आते हैं जो बच्चों को पकड़ कर ले जाना चाहते हैं और कई बार बच्चे उनके चंगुल से बच चुके हैं। हर बार नवरात्रि के महीनों में हमारी झुग्गी के आसपास जागरण होता है और एक दिन झुग्गी बस्ती में रहने वाली एक बालिका जागरण के सुबह के दिन घूम रही थी। उसने कुछ बाबा लोगों की बात सुन ली कि आज शाम को पूजा के समय सभी बच्चों को प्रसाद बाटेंगे और उसमें दवाई मिला देंगे फिर बच्चों को खिला देंगे। जब यह बात उस बालिका ने सुन ली तो उसने अपनी दूसरी सहेली को बताया और बालिका की सहेली ने अपनी माता जी को यह बात बताई। इस दौरान कुछ लोगों तक यह बात पहुंच गई पर जिनको यह बात पता नहीं चल पाई वह बच्चे उस जागरण में पहुंच गए।और उन्होंने दवाई वाला लड्डू खिला दिया। बच्चे कुछ देर तक खेलते

रहे और फिर वह घर की ओर आने लगे तो बाबा उनका पीछा करने लगे। इतनी देर में उन बच्चों को चक्कर आने लगे और उन बच्चों ने हल्ला मचा दिया। जब तक जागरण में उपस्थित लोग आ गए। वह बाबा लोग रफूचक्कर हो गए। झुग्गी बस्ती के बगल में कई सारी बिल्डिंग है और रोजाना बिल्डिंग में रहने वाले लोग बच्चों को कुछ ना कुछ सामान जैसे कपड़ा, कॉपी, किताब, खिलौने, खाने की चीज आदि देने के लिए आते रहते हैं और बच्चे खुशी-खुशी ले लेते हैं। इस दौरान उन दोनों बच्चों ने भी भगवान का प्रसाद समझकर ले लिया और उनके साथ ऐसा हादसा हो गया। इतना ही नहीं बच्चे अपनी झुग्गी बस्ती के पास की सड़क में खेलते रहते हैं और आसपास में कई लोग बैठे रहते हैं। एक दिन बच्चे खेल रहे थे कुछ लोग भेष बदल कर आए और उन खेलते हुए बच्चों में से 2 बच्चों को पकड़ लिया। और उनका मुंह दबाकर उन्हें ले जाने लगे। इतनी देर में वहां पर बैठे एक अंकल ने देख लिया और हल्ला मचाना शुरू कर दिया। झुग्गी बस्ती में सभी लोग बाहर निकल कर आने लगे और उन बच्चों के माता-पिता भी आ गए बच्चों को माता-पिता के हवाले किया। बच्चों की चोरी करने वाले लोगों को पकड़ लिया और फिर उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया। बच्चों का कहना है इन चोरी करने वाले लोगों को पुलिस कुछ नहीं करती और उन लोगों को कुछ देर तक अपने पास रखती है, थोड़ा मारती और फिर छोड़ देती है।

पानी न आने के कारण चोरी-छिपे पानी भरने को मजबूर ज्योति

बातूनी रिपोर्टर रोजी, बालक नामा रिपोर्टर असलम

आपको पता ही होगा कि गर्मी का मौसम आ चुका है और इस गर्मी के बढ़ने साथ-साथ सड़क पर रहने वाले कामकाजी बच्चों की समस्याएं भी बढ़ गयी हैं। बादशाहपुर की रहने वाली ज्योति की समस्या बहुत गंभीर है। ज्योति की उम्र १४ वर्ष है और वह नौवीं कक्षा में पढ़ती है। ज्योति ने हमारे पत्रकारों को बताया कि भैया गर्मी के मौसम में हमारे घर में लाइट नहीं आती, जिसकी वजह से घर में पानी नहीं आता। गर्मियों में पानी की खपत भी बहुत होती हैं और पानी न आने के कारण हमें पानी लेने के लिए घर से बाहर जाना पड़ता है। हमारे घर से कुछ दूर पर एक प्याऊ है। उस प्याऊ से

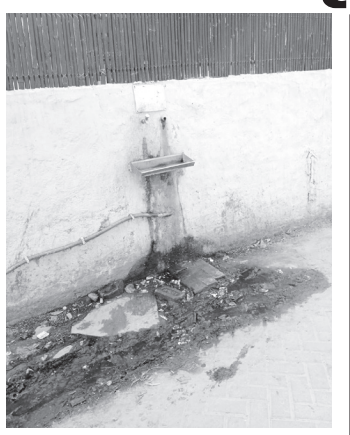

हम घर के लिए पानी भरकर लेकर आते हैं। प्याऊ का मालिक जब हमें बोतलों में पानी भर-भरकर अपने घर ले जा देख लेता है तो बहुत डाँटते हैं और कभी-कभी तो हमें बहुत गाली भी देते हैं और मारते भी हैं। क्योंकि प्याऊ जिसका है उसने बोर्ड पर लिखवा रखा है कि बोतलों में पानी भरना सख्त मना है। इसी वजह से हमें छुप-छुपकर पानी भरके अपने घर ले जाना पड़ता है, ताकि हमारी प्यास बुझ पाए। ज्योति चाहती है कि जैसे हमारी सर्दियों में लाइट रहती है और हमें पानी की दिक्कत नहीं होती है, वैसे ही गर्मी में घर में लाइट रहे और हमें पानी की बहुत ज्यादा दिक्कत न हो। हमें घर से बाहर पानी ढूंढकर लाना पड़ता है, जिससे कोई हमें डांटता है तो कोई हमें मारता और गाली भी सुनाता है। अब तो पानी का हमसे बिल भी लेने लगे हैं तो भी हमारी पानी की समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा हैं।

गांव में गंदे पानी की समस्याओं से जूझ रहे हैं बच्चे

गंदे पानी के निकास के लिए नाला बनवाने की लगायी गुहार

बातूनी रिपोर्टर तन्मय, बालकनामा रिपोर्टर असलम

बालकनामा के बातूनी रिपोर्टरों ने अपनी समस्या को बताते हुए कहा हम नोएडा के एक गांव में किराए के कमरे में रहते हैं। हमारे गाँव में पानी के निकास की समस्या को लेकर हम सभी परेशान हैं। गर्मी का मौसम भी इस समय अपने चरम पर है और आसपास भरे गंदे पानी में मच्छर पनपने शुरू हो गए हैं। बातूनी रिपोर्टर परिवर्तित नाम शिवम ने बताया, मैं जिस जगह किराए के कमरे में रहता हूं, हमारे घर के बगल में एक बड़ा सा गड्ढा है। कुछ गांव के लोगों का गंदा पानी उस गड्ढे में आता है। उस गंदे पानी में से बदबू तो आती ही है और शाम के समय इतने मच्छर लगते हैं कि वो घर में आकर हमें काटते हैं। जिस कारण हम पूरी रात सो नहीं पाते और बीमारियों के भी शिकार हो रहे हैं। गड्ढे के भरे गंदे पानी से घर के अंदर सीलन रहती है, जिसके कारण घर की मिट्टी गिरती रहती है और घर देखने में बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। इतना ही नहीं जब खाना पकाते हैं तो खाना पकाते समय मिट्टी खाने के अंदर भी चली जाती है। जब हम मालिक को यह बताते हैं तो मालिक हमें कहते हैं कि आप हमें हजार रुपए दे दीजिए हम इसमें पुट्टी एवं पेंट करवा देंगे। आप समझ ही गए होंगे हम किराया तो हर महीने देंगे ही पर घर में सीलन आने की वजह से हम और हजार रुपए दे जिससे घर में पेंट हो जाए। फिर तीन से चार महीने बाद दोबारा सीलन आने लगती है और फिर वही समस्या होने लगती है। हम बच्चों का कहना है जिन गावों में गंदे पानी के निकलने का नाला नहीं बना हुआ है, वहां नाला बनवाया जाए ताकि ऐसी समस्याओं से हमें जूझना ना पड़े।

बच्चों ने दिखाई ईमानदारी, अनजान व्यक्ति को लौटाया उसका खोया हुआ पर्स

ब्यूरो रिपोर्ट

हम जानते हैं कि अगर किसी का भला करेंगे तो ऊपर वाला हमारा भला जरूर करता है। नोएडा में रहने वाले 10 वर्ष के बालक ने बताया कि मैं नोएडा में अपने माता पिता के साथ किराए के कमरे में रहता हूं। मैं अपने आसपास के दोस्तों के साथ रोज पार्क में खेलने के लिए जाता हूं। हम पार्क में फुटबॉल, बैडमिंटन, खो-खो आदि खेल खेलते हैं। हम जब भी खेल खेलने के लिए पार्क जाते हैं तो हम पार्क में अपनी खुद की पानी की बोतल जरूर लेकर जाते हैं, ताकि यदि खेलते खेलते प्यास लग जाए तो हम पानी पी सके। एक दिन हम पार्क पहुंचे और फुटबॉल खेल रहे थे और हम अपनी पानी की बोतल भी लेकर

आए थे। वह पानी की बोतल हमने पार्क में स्थित कुर्सी पर रख दी और हम खेल खेलने लगे। उस कुर्सी पर आकर एक अंकल बैठ गए और वह अपना मोबाइल चलाने लगे। हमने उन अंकल को देख लिया कि वह उस कुर्सी पर काफी देर से बैठे हुए हैं। एक बार हम पानी पीकर भी चले गए और फिर दोबारा बोतल उधर ही रख कर खेलने के लिए चले गए। हमें खेलते खेलते काफी देर हो चुकी थी। जब हम दोबारा पानी पीने के लिए कुर्सी तक पहुंचे तो वह अंकल उस स्थान से जा चुके थे। हमने पानी पिया और 2 मिनट हम कुर्सी पर बैठे रहे अचानक से हमारी नजर एक बटुए पर पड़ी और उस बटुए में उन्हीं अंकल की फोटो, आधार कार्ड और कुछ पैसे भी रखे हुए थे। हम बिना कुछ निकालें उन अंकल को ढूंढने लगे। हम पार्क के गेट के बाहर पहुंचे तो देखा कि वह अंकल अपना खोया हुआ पर्स ढूंढ रहे थे। उन्होंने हमें बताया कि मेरा पर्स खो गया है। हमने उनका पर्स उनके हाथ में दिया और कहा कि एक बार आप देख लीजिए इस बटुए से कुछ गुम तो नहीं हुआ। अंकल ने उस बटुए में जितने पैसे थे और जितने जरूरतमंद चीजें थी आधार कार्ड, पैन कार्ड, आदि सब सलामत देखकर उन्होंने खुश होकर हमें सौ रुपए भी दिए और कहा कि यह लो आपका इनाम। हम खुश होकर वह पैसे लेकर आ गए और हमने आपस में वह पैसे बांट लिए।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

मेहनत का फल मिलने पर भावुक हुए बच्चे

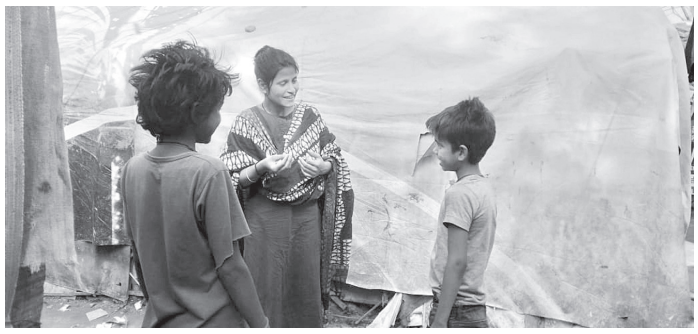

ब्यूरो रिपोर्ट

कामकाजी बच्चों को शिक्षा बड़ी ही मुश्किलों से प्राप्त होती है। क्योंकि सड़क पर रहने वाले कामकाजी बच्चे अपने घरेलू या फिर बाहर के कामों में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अपने आने वाले भविष्य के बारे में भी नहीं सोचते हैं। वैसे तो अभी जिन बच्चों को शिक्षा प्राप्त हो रही है वह इसका भरपूर फायदा उठाकर पढ़ाई कर रहे ँ और साथ में एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जा रहे हैं। जब से बच्चों के 2023 मे परीक्षाएं हुई हैं तब से लेकर अभी तक के बच्चों का रिजल्ट आने वाला था, जिससे वह परेशान और घबराये हुए थे। जब इस विषय को लेकर हमारी लखनऊ की बालकनामा पत्रकार ने स्कूल जाने वालों बच्चों से बातचीत की और साथ ही उनसे पूछा कि आपको क्या लग रहा है कि आपने जो परीक्षाएं दी हैं वह कैसी गई है? तो बच्चे ने बोला हमारी तरफ से तो अच्छा ही किया है। अब हमारा रिजल्ट कैसा आएगा यह पता नहीं है। जब बहुत दिनों के बाद यह खबर आई कि अब बच्चों का रिजल्ट स्कूल द्वारा दिया जा रहा है तो यह खबर सुनकर बच्चे खुश हो गए और स्कूल जाकर अपना रिजल्ट लिया। कुछ बच्चों को रिजल्ट मिल भी गए हैं, जिसको देखकर बच्चे खुश भी हुए क्योंकि उनका रिजल्ट अच्छा आया और वह दूसरी कक्षा में प्रवेश कर गए। बच्चों की खुशी में शामिल होने के लिए जब हमारी उनसे बातचीत हुई तो बच्चे ने बोला कि दीदी हम खुश हैं क्योंकि अब हम लोग नई कक्षा में पढ़ाई करेंगे। बच्चों के साथ उनके अभिभावक भी काफी खुश थे। बच्चों से बातचीत करते हुए और उनकी भावनाओं को समझते हुए पत्रकारों ने बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए यह कहा कि इसी तरह से पढ़ाई करनी है और भी अच्छे नंबरों से पास होना है और अपनी बस्ती का और अपने मम्मी पापा का नाम रोशन करना है।

गर्मी से परेशान बच्चे

बातूनी रिपोर्टर मीनाक्षी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

एक बच्चा अपने पापा के साथ रिक्शा चलाने का काम करता है और वह गर्मी ज्यादा होने की वजह से बहुत परेशान हो जाता है। गर्मी के कारण उसके पापा और वह रिक्शा नहीं चला पाते हैं। फिर वह किसी जगह पर रूकते तो वह बच्चा कहता था कि पापा हमें पानी पीना है तो उसके पापा उसे पानी पिलाते थे। वह बच्चा कहता है कि पापा यह पानी बहुत गर्म है तो उसके पापा ने कहा कि बेटा पानी पी लो क्योंकि इस जगह पर ठंडा पानी नहीं मिलेगा। इस गर्मी की वजह से हम ज्यादा देर काम नहीं कर पाते हैं। हम जब घर पर जाते हैं तो सोचते हैं कि पंखा की हवा भी मिलेगी या नहीं क्योंकि यहाँ गर्मी के मौसम में लाइट बहुत कम आती है। इसकी वजह से हम लोगों को छत पर या बाहर के बाहर सोना पड़ता है। जब हम स्कूल जाते हैं तो गर्मी होने की वजह से हमारा पानी बहुत गर्म हो जाता है और स्कूल में ठंडा पानी भी नहीं आता है। इसी कारण हमें वही गरम पानी पीना पड़ता है। जब हम लाइट की शिकायत करते हैं तो वह लोग हमारी सुनते ही नहीं हैं। गर्मी की वजह से हमारे यहां की झुग्गी बहुत गरम हो जाती है और पंखा चलने से भी कोई फायदा नहीं होता। लाइट ना होने के कारण यहां पर पानी भी नहीं आता है। गर्मी के मौसम में ज्यादातर पानी और बिजली की समस्या होती है। जब हम किसी के यहां से ठंडा पानी लेने जाते हैं तो वह ताना देते हैं और कहते हैं कि यह गरीब है जब देखो मुहं उठाकर पानी लेने चले आते हैं।

मिंटू बेचारा भूख से मारा, खाने को नहीं है पैसे और घरवालों से हारा

बालक नामा रिपोर्टर असलम

आपको पता ही होगा कि सड़क पर काम करने वाले कामकाजी बच्चों को दो वक्त की रोटी मिले तो उनके लिए वही सब कुछ है। इसीलिए ये बच्चे बहुत ज्यादा मेहनत करते हैं। आज हम आपको एक ऐसे बच्चे के बारे में बताने जा रहे हैं जिसके माता-पिता उसका बिल्कुल भी ध्यान नहीं रखते हैं। इसका परिवर्तित नाम मिंटू है और इसकी उम्र 8 वर्ष है। मिंटू ने बताया कि भैया मेरी माताजी कोठी में काम करती हैं और मेरे पिताजी गार्ड की नौकरी करते हैं। इसी वजह से मेरे माता-पिता मुझे सुबह 7 बजे ही उठाकर मुझे घर से बाहर निकाल देते हैं और घर का गेट लगाकर दोनों काम पर चले जाते हैं। मैं पूरा दिन भूखा प्यासा रहता हूं और मेरे माता-पिता शाम के 7

बजे आते हैं और जब आते हैं तब मुझे खाने को कुछ देते हैं। मेरे घर के पास मेरी नानी रहती हैं और मैं कभी कभी उनके पास खाना खाने जाता हूं तो वह मुझे खाना नहीं देती हैं और कहती हैं कि तेरी मां तो तुझे मेरे पास छोड़कर चली गई। अपने घर में जाकर खाना खाया करो मेरे पास तुम यहां खाना खाने मत आया करो। एक दिन जब मैं खाना खा रहा था तो मेरी नानी ने मेरे से मेरा खाना छीन लिया। इसी वजह से मैं पूरा दिन जहाँ पर खाने की रेडियां लगती हैं उनके ठेलों के पास जाकर बैठ जाता हूं और उनसे कुछ खाने को मांग लेता हूं तो वह लोग मुझे कुछ खाने को दे देते हैं। जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने उससे पूछा कि क्या तुम पढ़ना चाहते हो तो उसने बताया कि हां भैया में पढ़ना तो चाहता हूं पर मेरे माता-पिता मुझे पढ़ने नहीं देते हैं और ना ही मेरा नाम स्कूल में लिखवाते हैं। मैं पढ़-लिखकर अच्छा काम करके पैसे कमाकर एक बड़ा आदमी बनना चाहता हूँ।

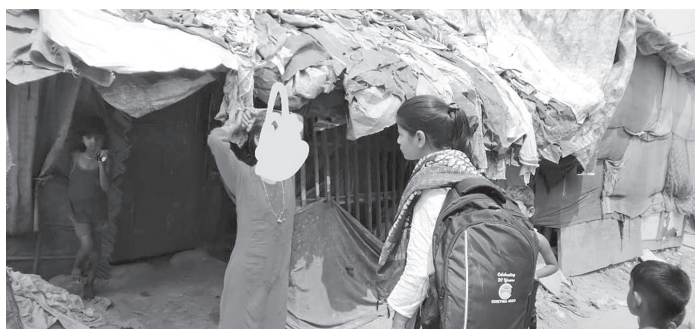

आये दिन बस्तियां उजड़ने से उजड़ा बच्चों का बचपन

ब्यूरो रिपोर्ट

आजकल कलयुग को देखते हुए अगर हम किसी भी व्यक्ति की जिंदगी के बारे में बात करें तो उसकी जिंदगी में एक दोस्त खास होता है, जिससे वह अपनी मन की बात साझा करता है। जरा सोचिए अगर किसी भी व्यक्ति की जिंदगी में कोई दोस्त ना रहे या फिर किसी कारण से बिछड़ जाए तो उसका क्या हाल होगा। जब लखनऊ के स्थानों में हमारी विजिट होती है तो अक्सर हमारे सामने यह केस आते हैं कि सड़क पर रहने वाले कामकाजी बच्चे किसी न किसी कारण से अपनी झोपड़ी छोड़ कर दूसरे स्थानों पर चले जाते हैं। जिसके कारण उनके जितने भी दोस्त होते हैं वह उनसे बिछड़ जाते हैं। इससे उन्हें बहुत दुख होता है क्योंकि आगे उनको वह दोस्त नहीं मिलते जिनके साथ उन्होंने बचपन बिताया है, खेला-कूड़ा है और मस्ती मजाक किया है। लखनऊ की बालकनामा रिपोर्टर जब झुग्गी की विजिट करने गयी तो पहले उस जगह पर बहुत सारी झोपड़िया थी लेकिन किसी कारण से कुछ लोगों ने अपनी झोपड़ियां हटा दी। उनके जाने से वहां पर रहने वाले बच्चों को बहुत दुःख हुआ है। बच्चों ने बताया कि जब से हमारी बस्ती खाली हुई है तब से यह जगह वीरान हो गई है जिसमें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है। पहले की तरह अब यहाँ पर कुछ भी नहीं बचा हैं न ही दोस्त और न ही वह माहौल। हमारे दोस्त ही थे जिनसे हम लोग बातचीत करते थे और अब वह भी नहीं हैं तो अब हम क्या करें।

जूता पॉलिश करके चलता है घर का खर्चा

रिपोर्टर किशन

सड़क पर काम करने वाले कामकाजी बच्चों के जीवन में परेशानियां तो बहुत हैं। कुछ ऐसी ही समस्याओं के बारे में पता लगाने के लिए बालकनामा के पत्रकारों ने नोएडा सेक्टर 18 की मार्केट का दौरा किया। जिस दौरान पत्रकारों की नजर लगभग 6 से 7 बच्चों पर पड़ी । वह सभी बच्चे जूता पॉलिश करने का काम कर रहे थे। पत्रकारों ने उन बच्चों से से बातचीत की तो परिवर्तित नाम दिव्यांश ने बताया कि सभी बच्चे अलग-अलग स्थानों जैसे नोएडा, दिल्ली, आदि से आते हैं। मैं दिल्ली के आनंद विहार के नजदीक में रहता हूं और मेरे घर में हम 5 सदस्य माताजी पिताजी, दो भाई और एक बहन हैं। माताजी कोठी में काम करती थी पर कुछ समय बाद माताजी की अचानक से तबीयत खराब हो गई और उनकी मृत्यु हो गई। वर्तमान में अब माताजी नहीं है और पिताजी बेलदारी का काम करते हैं। पिताजी पूरे दिन में जितना कमाते हैं उन सभी पैसों की दारू पी जाते हैं और घर में एक पैसा नहीं देते । हम किराए के घर में रहते हैं और घर की जिम्मेदारी मुझे संभालने पड़ती हैं। इसलिए मै जूता पॉलिश करने का काम करता हूं। मैं नोएडा सेक्टर 18 में जूता पॉलिश करने के लिए आता हूं। पहले मैं आनंद विहार में जूता पॉलिश करने का काम करता था। वहां पर

रोज नशेड़ी लोग मेरे और बच्चों के पैसे छीन लेते थे और काम नहीं करने देते थे। इसलिए हम रोज नोएडा सेक्टर 18 में जूता पॉलिश करने के लिए आते हैं। एक जूता पॉलिश करने के हम 20 रूपए लेते हैं और जिस दौरान पूरे दिन में 200 रूपए से लेकर ढाई सौ रूपए तक कमा लेते हैं और फिर उन्हें पैसों से घर का खर्चा चलाते हैं।

अपनी जान को जोखिम में डालकर खेलते हैं बच्चे खेल

बातूनी रिपोर्टर गोल्डी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

यह बात तों हम सभी लोग जानते हैं कि हमारे सड़क पर काम करने वाले कामकाजी बच्चों को खेलने की उतनी जगह नहीं मिलती है, जहाँ वह आसानी से खेल सके। जिसके कारण वह काफी खतरनाक खेल खेलना शुरू कर देते हैं जैसे की पेड़ में रस्सी बांध के झूला झूलना। लखनऊ के बस्ती के बच्चों का भी यही हाल है। वह कुछ इसी तरह के खेल खेलते हैं। हमारे बालकनामा पत्रकार ने वहां की कम्युनिटी विजिट करने के लिए गए तो

देखा एक बच्चा बोरी के अंदर घुसकर खेल रहा था। जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने इस विषय में जानने की कोशिश की तो बच्चों ने बताया कि दीदी और तो कहीं खेलने की जगह नहीं मिलती है। अगर कहीं खेलने के लिए भी जाते हैं तो भगा देते हैं तो हम अपने घर में रहकर यही वाला खेल खेलते हैं। हमने बच्चों से यह भी पूछा कि अगर आप बोरी के अंदर घुस कर खेलते हैं तो आपको सांस लेने में कोई दिक्कत तो नहीं होती तो बच्चे ने बताया कि नहीं दीदी जब सांस लेने में दिक्कत होती है तो हम बोरी के बाहर आकर खेलते हैं। हमने बच्चों से बोला कि आप यह खेल खेलते क्यों हो तो बच्चों ने बताया कि दीदी और कहां खेलने जाऊं। अगर कहीं खेलने चले भी जाते हैं तो लोग भगा देते हैं, जिसके कारण हम घर पर ही रह कर यह खेल खेलते हैं।

बस्ती में कूड़ा डालने के आलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं

आंधी तूफान आने से घरों के अंदर चला जाता है गन्दा कचरा

बातूनी रिपोर्टर ममता व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

हमारे कामकाजी बच्चों को इतनी जल्दी कोई भी सुविधाएं जैसे बच्चों के खेलने का स्थान हो या फिर सर्वजनिक शौचालय या फिर पानी इत्यादि की सुविधाएं जल्दी नहीं मिलती। इसी तरह बच्चों अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में इन सभी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने रिपोर्टर बैठक कराने के लिए कम्युनिटी विजिट की तो कम्युनिटी विजिट के दौरान एक बहुत बड़ा कूड़े का ढेर था जहां पर बस्ती के लोग कूड़ा डालते हैं। इस विषय पर पत्रकार ने अपने सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बातचीत की कि सब लोग यहां पर कूड़ा क्यों डालते हैं। तो बच्चों ने बताया कि दीदी कहीं कूड़ा डालने की जगह ही नहीं है। अगर हम यहां कूड़ा न डाले तो कहां डालें। जिसके कारण हम लोगों को यहीं पर कूड़ा फेंकना पड़ता है। हमने बच्चों से यह भी पूछा कि जब आप लोग यहां पर कूड़ा डालते हो तो इस कूड़े के ढेर से आप लोगों को कोई समस्या तो नहीं होती है तो बच्चों ने बताया कि दीदी बहुत सारी समस्या होती हैं जैसे कि अभी बरसात का महीना आने वाला है तो बहुत ज्यादा हवा भी चलेगी और जब हवा चलती है तो यहा कूड़ा उड़-उड़ कर हम लोगों के घर के अंदर चला जाता है जिसके कारण घर गन्दा हो जाता है।जब बारिश होती है तो कूड़े के साथ गंदा पानी भी हम लोगों के घर के सामने भर जाता है लेकिन हमारे पास यहां पर कूड़ा डालने के आलावा और कोई विकल्प ही नहीं है।

सरकारी जमीन खाली करवाने का निकाला नोटिस

झुग्गी के लोगों को अनाधिकारिक जमीन बेचकर बनाया बेवकूफ

रिपोर्टर किशन

गलत तो गलत कहलाता है। यदि एक चीज हम किसी को बेच देते हैं और फिर हम दोबारा वही चीज किसी को बेचते हैं तो वह ब्लैक मेल कहलाता है। नोएडा में कुछ ऐसी जगह भी है जो एक बार बिकाऊ होने के बाद दोबारा उस पर कब्जा करके ब्लैक में बेचा जाता है। बालकनामा के पत्रकारों ने नोएडा सेक्टर 78 की झुग्गी बस्तियों के बच्चों से बातचीत की। जिस दौरान 8 वर्षीय बालिका ने झुग्गी में होने वाली समस्याओं के बारे में बताया। बालिका ने बताया कि यहां पर 150 झुग्गियां है। हम पहले अपने माता- पिता के साथ बरोला गांव में किराए पर रहा करते थे। हमें पता चला कि पास में ही जमीन बिक रही है पर हमें यह नहीं पता था कि वह पहले से बिक चुकी है और सरकारी जमीन हो चुकी है। हमारे पिता और माता जी ज्यादा पढ़े लिखे नहीं हैं। इस कारण उन लोगों ने 70,000 रूपए देकर यह जमीन खरीद ली और हम 4 साल बिना समस्या के झुग्गी में रहे। यहां पर हमने ही नहीं और लोगों ने भी कुछ अधिक पैसे और कुछ कम पैसे देकर जमीन खरीदी। पर उन्हें भी यह नहीं पता चल पाया कि यह जमीन पहले से बिकाऊ है। अब बड़ी समस्या आ चुकी है। अथॉरिटी वाले लोग हर 2 महीने में आते हैं और झुग्गियां खाली करने के लिए कहते हैं। हम झुग्गी कैसे खाली कर दें क्योंकि हमने तो पैसे दिए हैं। अब जिस मालिक से हमने झुग्गी की जमीन खरीदी थी वह कुछ नहीं बोल रहा है। उसका कहना है कि यदि वह लोग कह रहे हैं तो आप खाली कर दो। अथॉरिटी वाले कुछ दिन पहले आए थे और वह 15 दिनांक 2023 तक की तारीख देकर गए हैं। और कह कर गए हैं यदि झुग्गी खाली नहीं की तो बिना कुछ पूँछे बिना कुछ सुने झुग्गी तोड़ देंगे।

अभी भी सिलबट्टे पर मसाला पीसने पर मजबूर बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

आज के जमाने में बहुत ही कम लोग हैं जो सिलबट्टे पर मसला पिसते हैं। अब अधिकतर लोग मिक्सी पर मसाला, दाल या फिर अन्य प्रकार की चीजे पीसते हैं। अभी भी बहुत लोग ऐसे भी हैं जिनको मिक्सी के बारे में पता भी नहीं है और जिनको पता भी होता है उनको लगता है कि बहुत ही महंगी मिलती है। जिसके कारण वह अभी भी सिलबट्टा पर मसाला या फिर दाल पीसते हैं। कुछ इसी तरह की अन्य प्रकार की चीजें वह अभी भी सिलबट्टा पर पीसते हैं। जब हमारे बालक नामा पत्रकार ने जब रिपोर्टर बैठक की और कम्युनिटी विजिट किया तो देखा एक बच्ची सिलवट पर मसाला पीस रही थी। जब उस बच्चे के पास जाकर हमारे बालाकनामा पत्रकार ने बात की और पूछा कि जब आप मसाला पीसते हो तो आपके हाथ में दर्द नहीं होता है तो उस बच्ची ने बताया कि दीदी जब हम मसाला पीसते हैं तो हमारे हाथ में बहुत दर्द होने लगता है। रोज रोज पीसने से हमारे हाथ की खाले फट जाती हैं, लेकिन मजबूरी है पीसना तो पड़ेगा ही। अगर नहीं पिसेंगे तो हमारे अभिभावक भी गुस्सा होने लगते हैं जिसके कारण हमें मजबूरी में सिलबट्टे पर मसाला पीसना पड़ता है।

जिंदगी से जंग जीत लेंगे हम

छोटे से घर में रहकर गुजर बसर करने को मजबूर शाहिद

बातूनी रिपोर्टर शाहिद अफरीदी, बालकनामा रिपोर्टर असलम

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जब एमआर टावर की झुग्गियों का दौरा किया तो पत्रकारों को पता चला कि एक बच्चा जिसका नाम शाहिद अफरीदी है, वो अपने माता-पिता के साथ यहाँ रहता है। परिवार में ज्यादा सदस्य होने के कारण शाहिद अफरीदी के घर में रहने में बहुत दिक्कत होती थी। इसी को देखते हुए शाहिद अफरीदी और उसके नाना ने मिलकर घर के सामने बॉस और चद्दर से एक छोटा सा घर बनाया जिसमें उसके नाना और शाहिद रात को सोते हैं। जब हमने शाहिद से पूँछा कि आप एक दूसरा घर क्यों नहीं ले लेते तो अफरीदी ने बताया कि मेरे पिताजी ऑटो चलाते हैं, उनकी ज्यादा कमाई नहीं है। जिसके कारण एक ही घर में हम सबको रहना पड़ता है। इसलिए हम दूसरा घर नहीं ले पा रहे। हमारे आस-पास ज्यादा गँदगी होने के कारण वहां बहुत मच्छर भी आते हैं । परंतु मजबूरी के कारण हम कंबल ओढ़ कर सो जाते हैं। हमें बहुत गर्मी भी लगती है क्योंकि जो छोटा सा घर हमने बनाया है उसमें पंखा तो लग नहीं सकता है और जो हवा चलती है उसी से कुछ रहत मिल जाती है। परंतु मच्छर से हमारा जीना मुश्किल हो जाता है। लेकिन क्या करें मेरे पिताजी आज अच्छा काम करते तो हम भी अच्छी तरह से रहते।

काला गेट की झुग्गियों का सच

मौत के कुए में रहते हैं लोग

बालक नामा रिपोर्टर असलम

अचानक से जान पर आ जाना आश्चर्यजनक है। मजबूरी और गरीबी क्या-क्या नहीं करवाती और क्या-क्या नहीं दिखाती। नोएडा सेक्टर 49 बरोला गांव में काला गेट के पास पत्रकारों ने दौरा किया तो ऐसी चौका देने वाली खबर पता चला कि जिसे सुनकर हम हैरान रह गए। काला गेट में लगभग 350 से लेकर 400 तक झुग्गियां एवं पक्के घर है। सभी लोग इन झुग्गी एवं पक्के घरों में रहते हैं और इनके घर ऐसे खतरे के स्थान पर बने हैं, जहां पर दिनदहाड़े जान जा सकती है। काले गेट की झुग्गियों एवं पक्के घरों के नीचे पाइप लाइन है और बच्चों का कहना है कि वहां पर कुएं भी हैं। उन्ही के ऊपर घर बना रखे हैं और बगल में बड़ा सा नाला भी है। 6 दिनांक, 2023 में रात एक से डेढ़ के बीच के समय अचानक से घर के नीचे से पाइप फटने की आवाज आने लगी और घर में रहने वाले लोग एवं बच्चों को पता चल गया कि अब जानलेवा खतरा है। वह आवाज तो चलती रही और उन्होंने जल्दी-जल्दी अपना रात में ही समान निकालना शुरू कर दिया और कुछ ही समान निकाल पाए थे कि एक डेढ़ घंटे बाद वह घर बिल्कुल सीधा नीचे धंसता हुआ चला गया। उस समय घर के अंदर कोई भी नहीं था क्योंकि उन्हें पहले से पता चल चुका था। बगल में एक से दो घर और धंसते हुए चले गए। पत्रकारों ने विस्तार से जानकारी प्राप्त करने के लिए काले गेट में रहने वाले बच्चों से बातचीत की, तब जाकर एक बालिका ने बताया कि इस झुग्गी में प्रधान भी बना हुआ है। यह घर धँसने की खबर प्रधान को है। पर यह घर धँसने की बात एक बार की नहीं है। पहले भी एक मंदिर इसी तरह धस चुका है। प्रधान को सारी खबर रहती है। प्रधान काले गेट के अंदर नहीं रहता वह बरौला गांव के अंदर रहता है और बस इधर देखने आता है और कहता है कि चलो इधर का सुधार करेंगे पर कुछ सुधार नहीं होता। बच्चों का कहना है झुग्गी बस्ती में रहने वाले सभी लोग इस बात की खबर पुलिस को न दे। क्योंकि यदि पुलिस वालों को यह बात पता चल गई तो सभी लोगों को यहां से जाना पड़ सकता है और पता नहीं हमें सरकार की तरफ से जमीन मिलेगी या नहीं इस कारण कोई भी यह बात पुलिस तक नहीं पहुंचाता है।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार और अभिनव आउटसोर्सिंग प्राइवेट लिमिटेड को का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471